विषय - सूची

II Semester General Hindi

Unit I प्राचीन कविता

1. कबीरदास 5 दोहे
2. सूरदास बाल वर्णन
3. तुलसीदास 5 दोहे

Unit II आधुनिक कविता

1. मातृभाषा प्रेम	भारतेंदु हरिश्चंद्र
2. भिक्षुक	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
3. मादा भ्रूण	रजनी तिलक

Unit III सामान्य निबंध

1. विद्यार्थी और अनुशासन
2. विश्वभाषा के रूप में हिंदी
3. पर्यावरण प्रदूषण

Unit IV प्रयोजन मूलक हिंदी

1. प्रयोजन मूलक हिंदी – परिभाषा
2. सरकारी पत्र – परिभाषा एवं पत्र नमूना परिपत्र, ज्ञापन, अधिसूचना

Unit V अनुवाद, संक्षेपण

1. अनुवाद - अंग्रेजी से हिंदी (चार पाँच पंक्तियों) तेलुगु से हिंदी (चार पाँच पंक्तियाँ)
2. संक्षेपण

1. कबीर दास 5 दोहे

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। वह संत कव था। वह पहले भक्त बाद मे कवि था। वह निर्गुण निराकार ब्रहमा की उपासना करने वाले थे। उनका जन्म काशी के समीप मगहर नामक गाँव मे हुआ था। कुछ विद्वनों के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राहणी के गर्भ से हुआ। लोक लाज के भय से उस स्त्री ने बालक को छोड दिया। नीरू और नीमा नामक जुलाहे दंपति ने उस बालक का पालन पोषण किया। कबीर का विवाह लोई नामक स्त्री से हुआ। उनकी दो संताने थी, कमाल और कमाली।

कबीर रामानंद से ज्ञान मार्ग की दीक्षा ली। उन्ही से कबीर को प्रेम, भक्ति और राम नाम की अमर दीक्षा मिली। अपनी पढाई के बारे मे वह खुद कहता था कि " मसि कागद छुआ नहि "। इससे स्पष्ट होता है कि वह अनपढ था। उनके घर नित्य बहुत सारे साधु आते थें। साधुओं के सांगत्य से प्राप्त ज्ञान से वे दोहे लिखते थे। वह सोचते थे कि जिस दिन उनके घर कोई साधु नही आया तो उस दिन व्यर्थ गया। कबीर की भाषा खिचिडी भाषा है। जो व्रज, अवधी, राजस्थानी, अरबी पारसी खडीबोली आदि का सम्मिश्रण है। इसका नाम सधुक्कडी कही गयी है। उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संकलन बीजक नामक ग्रंथ में किया है। बीजक के तीन भाग है साखी सबद, रमैनी।

साखी

1. साधु ऐसा चाहिए, जैसे सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देय उडाय।।
2. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान।।
3. पाहन पूजै तो हरि मिलै, तो मैं पूजें पहाड।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।
4. निन्दक निपरे रखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिनु, निर्मल करै सुभाय।।
5. जब मै था तब गुरु नहीं, अब गुरु है मैं नाहि।
प्रेम गती अति सॉकती, या में दो न समाहिं।।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ :

1. साधु ऐसा चाहिए, जैसे सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देय उडाय।।

शब्दार्थ: सूप – छाजा, सुभाय – स्वभाव, सार सार – सारवान पदार्थ, गहि – स्वीकारना, थोथा – व्यर्थ पदार्थ, उडाय – छोड़ना,
कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा कबीर दास के द्वारा लिखा गया है। कबीर दास हिंदी साहित्य के साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। इनका जन्म काशी के समीप मगहर मे हुआ। नीरू और नीमा इनके मॉ ... बाप थे। ये गुरू रामानंद के शिष्य थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। इनके प्रमुख ग्रंथ है... बीजक, रमैनी और सबद।
संदर्भः साधुओं के लक्षणों के बारे मे बताते हुए कबीरदास ने यह दोहा लिखा।
भावः प्रस्तुत दोहे में कबीर दास ने सज्जन पुरूष के लक्षणों के बारे मे बताते हैं। कबीर कहते है कि साधू या सज्जन व्यक्ति को सूप के समान होना चाहिए। सूप जिस तरह सारवान पथार्थ को ग्रहण करके भूसे को उड़ा देती है, उसी प्रकार साधू को भी संसार में अच्छी बातों को ग्रहण करके बुरी चीजों को छोड देना चाहिए।।
विशेषताः सज्जनो के लक्षणों के बारे मे बताया गया है
2. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान।।
शब्दार्थ: जाति – वर्ण, साधू – सज्जन, ज्ञान – मोल – म्यान -

कवि परिचय: प्रस्तुत दोहा कबीर दास के द्वारा लिखा गया है। कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। इनका जन्म काशी के समीप मगहर मे हुआ। नीरू और नीमा इनके माँ... बाप थे। ये गुरू रामानंद के शिष्य थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। इनके प्रमुख ग्रंथ है... बीजक, रमैनी और सबद।

संदर्भः जातिवाद का विरोध करने के संदर्भ में कबीर दास ने यह दोहा लिखा।

भावः कबीर दास कहते है कि यदि हमें कोई साधू मिले तो उनसे उनकी जाति के बारे में मत पूछों। उनके अंदर की ज्ञान के बारे में पूछो। इसका एक उदाहरण देते हुए कवि कहते है कि यदि हमे तलवार खरीदना है तो उसकी धार देख कर खरीद लों न कि उसकी म्यान। यहाँ कवि का कहना है कि तलवार की म्यान की तरह मानव की जाति भी बाहरी है। मानव का ज्ञान ही संसार के लिए उपयोगी हैं।

विशेषताः जाति वाद का विरोध किया गया है।

3. पाहन पूजै तो हरि मिलै, तो मैं पूजें पहाड।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

शब्दार्थ: पहन – पत्थर, हरि – भगवान, पहाड – पर्वत, ताते – उससे, चक्की – जॉता, भली - अच्छी पीस - आटा

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा कबीर दास के द्वारा लिखा गया है। कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण मक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। इनका जन्म काशी के समीप मगहर मे हुआ। नीरू और नीमा इनके मों... बाप थे। ये गुरू रामानंद के शिष्य थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। इनके प्रमुख ग्रंथ है... बीजक, रमैनी और सबद।

संदर्भ : मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए कबीर ने यह दोहा लिखा।

भावः कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि है। उनके अनुसार भगवान तो है, लेकिन उनका कोई रूप नही हैं। वह निराकार है। इसलिए कवि कहते है कि हे भाई मंदिर में मूर्ति के रूप मे जो पत्थर है, उसकी पूजा करने मात्र से भगवान मिलता है तो मैं पहाड पूजने केलिए भी तैयार हूँ। इससे वह पत्थर मली है जो चक्की के रूप में हमारे घरों में होती है क्योंकि इससे संसार के लोगों को आटा पीसने का उपयोग होती है।

विशेषता : मूर्ति पूजा का विरोध किया गया है।

4. निन्दक निपरे रखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिनु, निर्मल करै सुभाय।।

शब्दार्थ: निंदक - निंदा करनेवाला, निपरे - पास ही, ऑगन - प्रांगण, छवाय – बनाकर, साबुन - धुलाई तरल, सुमय – स्वभाव

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा कबीर दास के द्वारा लिखा गया है। कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। इनका जन्म काशी के समीप मगहर मे हुआ। नीरू और नीमा इनके माँ... बाप थे। ये गुरू रामानंद के शिष्य थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। इनके प्रमुख ग्रंथ है.... बीजक, रमैनी और सबद।

संदर्भः मानव को अपने...आप सुधारने का मार्ग बताते हुए कबीर दास जी ने यह दोहा लिखा।

भाव : कबीर दास कहते है कि निंदा करने वालो को अपने पास ही रखना चाहिए। साधारणतः लोग निंदक को दूर रखते है। लेकिन कबीर के अनुसार निंदक को हमारे घर के आंगन में ही कुटी बनाकर रखना चाहिए। उसके कारण हम अपने बुराइयो को जानकर सुधर सकते है। इसी कारण कवि कहते है कि निंदक को पास रखने से पानी और साबुन के बिना हमारी सफाई हो जाती है।

विशेषताः निंदक को पास रख कर अपने... आप को सुधारने का मार्ग बताया गया है।

5. जब मैं था तब गुरू नहीं, अब गुरु है मैं नाहि।
प्रेम गती अति सॉ कती, या में दो न समाहिं।।

शब्दार्थ: मैं - घमंड/अहंकार, गुरु – शिक्षक, गति – गली, सॉकली - संकरी

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा कबीर दास के द्वारा लिखा गया है। कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। इनका जन्म काशी के समीप मगहर मे हुआ। नीरू और नीमा इनके मॉ ... बाप थे। ये गुरू रामानंद के शिष्य थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। इनके प्रमुख ग्रंथ है.... बीजक, रमैनी और सबद।

संदर्भः घमंड या अहंकार को छोडने केलिए कहते हुए कबीर ने यह दोहा लिखा।

भावः इस दोहे में "मैं" का अर्थ है घमंड। कबीर कहते है कि जब हम घमंड से होते है तब हम गुरू को समझ नहीं सकते। इसीकारण घमंड को त्यागते ही हमे गुरू की महानता मालूम होती है। प्रेम रूपी गली अति सांकरी होती है। उसमे प्रेम और घमंड दोनो केलिए जगह नहीं होती है। कवि का कहना है कि प्रेम और घमंड दो मिन्न... भिन्न मार्ग है। दोनो कभी मिलते नहीं।

विशेषता: प्रेम और घमंड का अंतर बताया गया है।

लघु प्रश्नोत्तर :

1. कबीर दास का कवि परिचय दीजिए ?

कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। वह संत कव था। वह पहले भक्त बाद मे कवि था। वह निर्गुण निराकार ब्रह्मा की उपासना करने वाले थे। उनका जन्म काशी के समीप मगहर नामक गाँव मे हुआ था। कबीर रामानंद से ज्ञान मार्ग की दीक्षा ली। उन्ही से कबीर को प्रेम, भक्ति और राम नाम की अमर दीक्षा मिली। अपनी पढाई के बारे मे वह खुद कहता था कि " मसि कागद छुआ नहि। इससे स्पष्ट होता है कि वह अनपढ था। कबीर की भाषा खिचिडी भाषा है। जो व्रज, अवधी, राजस्थानी, अरबी पारसी खडीबोली आदि का सम्मिश्रण है। इसका नाम सधुक्कडी कही गयी है। उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संकलन बीजक नामक ग्रंथ में किया है। बीजक के तीन भाग है साखी...सबद... रमैनी।

2. साधुओं के बारे मे कबीर दास क्या कहते है ?

कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। वह संत कव था। वह पहले भक्त बाद मे कवि था। वह निर्गुण निराकार ब्रह्मा की उपासना करने वाले थे। कबीर मूलतः समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे। कबीर दास सज्जन पुरुष के लक्षणों के बारे मे इस प्रकार बताते हैं। कबीर कहते है कि साधू या सज्जन व्यक्ति को सूप के समान होना चाहिए। सूप जिस तरह सारवान पथार्थ को ग्रहण करके भूसे को उड़ा देती है, उसी प्रकार साधू को भी संसार में अच्छी बातों को ग्रहण करके बुरी चीजों को छोड देना चाहिए।

3. कबीर ने गुरु की महिमा कैसे दर्शायी है ?

कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है। वह संत कव था। वह पहले भक्त बाद में कवि था। वह निर्गुण निराकार ब्रह्मा की उपासना करने वाले थे। कबीर के अनुसार "मैं" का अर्थ है घमंड। कबीर कहते है कि जब हम घमंड से होते है तब हम गुरू को समझ नहीं सकते। इसीकारण घमंड को त्यागते ही हमे गुरू की महानता मालूम होती है। प्रेम रूपी गली अति सांकरी होती है। उसमे प्रेम और घमंड दोनो केलिए जगह नहीं होती है। कवि का कहना है कि प्रेम और घमंड दो मिन्न... मिन्न मार्ग है। दोनो कभी मिलते नहीं।

सूरदास

सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति घारा के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म सं 1483 में रूनकता नामक गाँव में हुआ। सूरदास जी जन्मांध थे या बाद में अंधे हुए...इस संबंध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। वे रूनकता में गउधार के पास रहते थे। वल्लमाचार्य से पुष्टि मार्ग में दीक्षा लेने के बाद उसका प्रचार करने लगे। मथुरा के गउघाट पर श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन... कीर्तन करते थे। महाकवि सूरदास वल्लाभाचार्य के शिष्यों में प्रमुख थे। साथ ही अष्टछाप के कवियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

सूरदास की रचनाओं के बारे में कहा जाता है कि सूरदास ने सवा लाख पदों रचना की। इनका मुख्य विषय बाल कृष्ण की लीलाएँ, गोपिकाओ की रास लीला, भ्रमरगीत और विनय संबंधी पद। उनके द्वारा लिखे गए प्रसिद्धग्रंथों के नाम इस प्रकार है... सूर सारावली, सूरसागर, साहित्य लहरी। उन्होने अपनी रचनाओं में व्रज भाषा का प्रयोग किया है। उनके सभी पद गेय और माधुर्य गुण प्रधान है। सूरदास ने भगवान कृष्ण के बाल्य रूप का अत्यत सजीव और स्वाभाविक चित्रण किया हैं। सूरदास ने भगवान कृष्ण की भक्ति कर बहुत ही खूबसूरती से उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। वात्सल्य रस का वर्णन जिस प्रकार सूरदास ने किया है, उसी प्रकार अन्य कोई नहीं कर सकें। माना जाता है कि सूरदास का देहांत पारसौली नामक गाँव में सं 1640 के लगभग हुआ।

सूरदास बाल वर्णन

1.सोभित कर नवनीत लिए। / घुटुरुनि चलत रेनु... तन.. मंडित, मुख दधि लेप किए।
चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन.... तिलक दिएं। / लट... लटकनि मनमत्त मधुप... गत, मादक मधुहिं पिए।
कठुला... कंठ वज्र केहरि... नख, राजत रुचिर हिए। / धन्य सूर एको पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।
2. किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत। / मनिमय कनक नंद कैं ऑगन, बिम्ब पकरिवैं धावत।।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौ पकरन चाहत। / किलकि हँसत राजत है दंतियों, पुन... पुन तिहिं अबगाहत।।
कनक... भूमि पर कर... पग... छाया, यह उपमा इक राजति। / प्रतिकर प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल... दसा... सुख निरखि जसोदा, पुनि... पुनि नंद बुलावत। / ऑचरा तर लै ढॉकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावती।।

कठिन शब्दार्थ

1. शोभित... शोभायमान, नवनीत... माखन, घुटुरूनि... घुटनों पर, रेनु.... धूलि, तन... शरीर, मंडित... लगा हुआ, दधि... दही, चारू... सुंदर, कपोल.. गाल, गोरोचन... केसर रंग, मनमत्त... मस्त, मधुप... गत... भौरो का समूह, मादक... नशीला, कठुला...कंठ की माला, केहरि नख... बाघ नख, हिय....हृदय, कल्प... साल
2. किलकत्त... जोर से आवाज मारना, कान्ह... कृष्ण, कनक... सोना, पकरन... पकडना, निरखि... देखकर, छाँहु... छाया, कर... हाथ, राजत..प्रकाशमान, बैठकी... आसन, ऑचरा... ऑचल

1. सूरदास का कवि परिचय दीजिए ?

सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण मक्ति धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म से 1483 में रूनकता नामक गाँव में हुआ। सूरदास जी जन्मांध थे या बाद में अंधे हुए... इस संबंध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। वल्लभाचार्य से पुष्टि मार्ग में दीक्षा लेने के बाद उसका प्रचार करने लगे। मथुरा के गउघाट पर श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन... कीर्तन करते थे। सूरदास की रचनाओं के बारे में कहा जाता है कि सूरदास ने सवा लाख पदों रचना की। इनका मुख्य विषय बाल कृष्ण की लीलाएँ, गोपिकाओ की रास लीला, भ्रमरगीत और विनय संबंधी पद। उनके द्वारा लिखे गए प्रसिद्धग्रंथों के नाम इस प्रकार है... सूर सारावली, सूरसागर, साहित्य लहरी। उन्होने अपनी रचनाओं में व्रज भाषा का प्रयोग किया है। माना जाता है कि सूरदास का देहांत पारसौली नामक गाँव में सं 1640 के लगभग हुआ।

2. बाल कृष्ण की लीलाओं का वर्णन कीजिए ?

बाल कृष्ण घुटनो के बल चलने लगे है। राजा नंद का आँगन सोने से बना है और मणियों से जटित है। इस ऑगन में श्रीकृष्ण घुटनों के बल चलते है तो किलकारी भी मारते है और कभी अपने प्रतिबिंब को देखकर पकडने केलिए दौडते है। जब वे किलकारी मारकर हँसते है तो उनके मुख पर दो दॉत शोभा देते है। यानी बहुत ही सुंदर लगता है। उन दाँतों के प्रतिबिंब को भी

वे बार बार पकडने का प्रयास करते है। उनके हाथ और पैरों की छाया उस सोने के फर्श पर ऐसी प्रतीत होती है मानो प्रत्येक मणि पर उनके कमल जैसे हाथ और पैरों का प्रतिबिंब पडने से ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर कमल के फूलों का आसन बिछा हुआ हो।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. सोभित कर नवनीत लिए। घुटुरूनि चलत रेनु... तन.. मंडित,
मुख दधि लेप किए। चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन.... तिलक दिएं।

कवि परिचयः सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। कृष्ण भक्ति धारा में सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। वे गुरू वल्लभाचार्य के शिष्य थे। कुछ लोगों के अनुसार उनका जन्म सीही में और कुछ लोगों के अनुसार रूनकता में हुआ। इनके द्वारा रचित सवा लाख पदो 'के मुख्य विषय कृष्ण की बाल लीला और रासलीला, भ्रमर गीत और विनय हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी इनके प्रमुख ग्रंथ है।

संदर्भः बाल कृष्ण के नख... शिख वर्णन करने के संदर्भ में कवि ने यह पद लिखा।

भावः प्रस्तुत पद में सूरदास बाल गोपाल के नख.... शिख सौदर्य का अद्वितीय वर्णन कर रहे है। श्रीकृष्ण हाथ में दही लिए हुए है। घुटनों के बल से चलने के कारण उनका शरीर धूल... धूसरित हो गया। वे अपने मुख पर दही का लेप लिए हुए है। उनके कपोल सुंदर है। नेत्र चंचल हैं और माथे पर गोचारण का तिलक लगा हुआ है।

विशेषता: बाल कृष्ण के सुंदर मुख और उनकी बाल लीलाओं का वर्णन किया गया है।

2. लट... लटकनि मनमत्त मधुप... गत, मादक मधुर्हि पिए।
कठुला... कंठ वज केहरि... नख, राजत रूचिर हिए। धन्य सूर एको पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।

कवि परिचयः सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। कृष्ण भक्ति धारा में सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। वे गुरू वल्लभाचार्य के शिष्य थे। कुछ लोगों के अनुसार उनका जन्म सीही में और कुछ लोगों के अनुसार रूनकता में हुआ। इनके द्वारा रचित सवा लाख पदो 'के मुख्य विषय कृष्ण की बाल लीला और रासलीला, भ्रमर गीत और विनय हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी इनके प्रमुख ग्रंथ है।

संदर्भः बाल कृष्ण के नख... शिख वर्णन करने के संदर्भ में कवि ने यह पद लिखा।

भाव : बाल कृष्ण की लटें इस प्रकार लटकी हुई है मानों मादक मधु का पान किये हुए मतवाले भौंरे हो। उनके वक्षस्थल पर वज और सिंह का नख तथा कंठ में कठुला शोभायमान है। सूरदास जी कहते है कि कृष्ण के इस मुख पर पल भर भी दर्शन लाभ होना जीवन को धन्य बना देता है, फिर सैकडों कल्पों तक जीने से क्या लाभ ?

विशेषता: बाल कृष्ण के केशों, उनके गले की मालाओं का वर्णन किया गया है।

3. किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं ऑगन, बिम्ब पकरिवैं धावत।।

कवि परिचयः सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। कृष्ण भक्ति धारा में सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। वे गुरू वल्लभाचार्य के शिष्य थे। कुछ लोगों के अनुसार उनका जन्म सीडी में और कुछ लोगों के अनुसार रूनकता में हुआ। इनके द्वारा रचित सवा लाख पदो 'के मुख्य विषय कृष्ण की बाल लीला और रासलीला, भ्रमर गीत और विनय हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी इनके प्रमुख ग्रंथ है।

संदर्भः सोना और मणियों से युक्त नंद के आँगन में खेलते हुए बाल.. गोपाल का वर्णन करने के संदर्भ में सूरदास ने यह पद लिखा।

भावः प्रस्तुत पद में कवि सूरदास श्रीकृष्ण के सौदर्य एवं बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए कहते है कि अब बाल कृष्ण घुटनो के बल चलने लगे है। राजा नंद का ऑगन सोने से बना है और मणियों से जटित है। इस ऑगन में श्रीकृष्ण घुटनों के बल चलते है तो किलकारी भी मारते है और कभी कभी अपने प्रतिबिंब को देखकर पकडने केलिए दौडते है।

विशेषता: नंद राज का आंगन और बाल कृष्ण की लीलाओं का का सुंदर वर्णन किया गया हैं।

4. किलकि हॅसत राजत है दंतियों, पुन... पुन तिहिं अबगाहत।।
कनक... भूमि पर कर... पग... छाया, यह उपमा इक राजति। / प्रतिकर प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।

कवि परिचयः सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। कृष्ण भक्ति धारा में सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। वे गुरू वल्लभाचार्य के शिष्य थे। कुछ लोगों के अनुसार उनका जन्म सीडी में

और कुछ लोगों के अनुसार रूनकता में हुआ। इनके द्वारा रचित सवा लाख पदो 'के मुख्य विषय कृष्ण की बाल लीला और रासलीला, भ्रमर गीत और विनय हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी इनके प्रमुख ग्रंथ है।

संदर्भः सोना और मणियों से युक्त नंद के आँगन में खेलते हुए बाल.. गोपाल का वर्णन करने के संदर्भ में सूरदास ने यह पद लिखा।

भाव : जब बाल कृष्ण किलकारी मारकर हँसते है तो उनके मुख पर दो दॉत शोभा देते है। यानी बहुत ही सुंदर लगता है। उन दाँतों के प्रतिबिंब को भी वे बार बार पकडने का प्रयास करते है। उनके हाथ और पैरों की छाया उस सोने के फर्श पर ऐसी प्रतीत होती है मानो प्रत्येक मणि पर उनके कमल जैसे हाथ और पैरों का प्रतिबिंब पडने से ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर कमल के फूलों का आसन बिछा हुआ हो।

विशेषताः बाल कृष्ण की लीलाओं का का सुंदर वर्णन किया गया हैं।

5. बाल... दसा... सुख निरखि जसोदा, पुनि...पुनि नंद बुलावत।
अॅचरा तर लै ढॉकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावती।।

कवि परिचयः सूरदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। कृष्ण भक्ति धारा में सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। वे गुरू वल्लभाचार्य के शिष्य थे। कुछ लोगों के अनुसार उनका जन्म सीही में और कुछ लोगों के अनुसार रूनकता में हुआ। इनके द्वारा रचित सवा लाख पदो 'के मुख्य विषय कृष्ण की बाल लीला और रासलीला, भ्रमर गीत और विनय हैं। सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी इनके प्रमुख ग्रंथ है।

संदर्भ: बाल कृष्ण की लीलाओं और यशोदा माँ के वात्सल्य का वर्णन करने के संदर्भ में सूरदास ने यह पद लिखा।

भाव : श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को देख कर माता यशोदा जी बहुत आनंदित होती है यानि अपने बेटे द्वारा किए जा रहे खेल को देखकर माता यशोदा गद्गद होती हैं। और बाबा नंद को भी बार.. बार वहाँ बुलाती है। सूरदास जी कहते है कि इसके बाद माता यशोदा मेरे प्रभु बालक कृष्ण को अपने ऑचल से ढककर दूध पिलाने लगती है।

विशेषता : बाल कृष्ण की लीलाओं का और यशोदा माँ की प्यार का सुंदर वर्णन किया गया हैं।

3. तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके माँ... बाप थे। कहा जाता है कि जन्म के तुरंत ही उनके मुख से रोने की जगह "राम" शब्द निकला। इसी कारण इनके बचपन का नाम "रामबोला" रखा गया।

तुलसीदास की पत्नी का नाम रत्नावली था। तुलसी की जीवनी के बारे में एक कहानी प्रचलित है। तुलसीदास पत्नी से बहुत प्यार करता था। एक दिन पत्नी मायके चली गयी। तुलसी घर आकर देखा तो पत्नी नहीं थी। पत्नी को देखने वह आधी रात के समय मूसलाधार वर्षा में ससुराल चले गए। रत्नावली उनके प्रेम को तिरस्कार करते हुए कहा कि आप जितना प्रेम मुझसे करते है, उतना प्रेम भगवान राम से करना चाहिए। यह सुनते ही तुलसीदास की मोह.. माया छोडकर भगवान राम के भक्त बन गए। भारत के सभी तीर्थस्थानों के भ्रमण करके वे स्थायी रूप से काशी में रहने लगे। बाबा नरहरि दास इनके गुरू थे।

रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। रामचरित मानस उनकी ही नहीं, अपितु विश्वसाहित्य के श्रेष्ठतम ग्रंथों में एक है। कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई। महाकवि सूरदास और गोस्वामी तुलसीदास दोनो समकालीन और हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। इन दोनो के बारे मे एक उक्ति प्रचलित है.... सूर... सूर, तुलसी शशि।

तुलसीदास के दोहे

1. सोई ज्ञानी सोई गुनी, जन सोई दाता ध्यानि।
तुलसी जाके चित्त भई, राग द्वेष का हानि।।
2.पर सुख सम्पत्ति देखि सुनि जरहि जे जड बिनु आगि।
तुलसी तिनके भाग ते, हम कहें पुछत भागि।।
3.तुलसी संत सुअंब तरू, फूलि. फलहि पर...हेत।

इतते यह पाहन हनत, उतते वे फल देत।।
4.मुखिया मुख सो चाहिए, खान...पान को एक।
पालै पोसे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।
5.गो..धन, गज.धन, बाजि.. धन और रतन.. धन खान।
जब आवत संतोष.. धन, सब धन धूलि समान।।

लघु प्रश्नोत्तर

1.गोस्वामी तुलसीदास का कवि परिचय लिखिए ?

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके मॉ... बाप थे। भारत के सभी तीर्थस्थानों के भ्रमण करके वे स्थायी रूप से काशी में रहने लगे। बाबा नरहरि दास इनके गुरू थे।रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। रामचरित मानस उनकी ही नहीं, अपितु विश्वसाहित्य के श्रेष्ठतम ग्रंथों में एक है। कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई।

2. तुलसी के अनुसार सज्जन किसके समान है ?

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की राममक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास कहते है कि सज्जन व्यक्ति आम के पेड के समान है। सज्जन व्यक्ति और आम का पेड... दोनों भी दूसरों के हित केलिए काम करते है। जिस प्रकार आम का पेड दूसरों केलिए ही फलता है और फूलता है, उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति भी दूसरों की भलाई केलिए ही काम करता है। आम लेने केलिए हम पेड पर पत्थर मारते है, लेकिन वह हमे मीठे फल देता ही रहता है। उसी प्रकार सज्जन व्यक्तियों को कितनी हानि पहुँचाने पर भी वह दूसरो की भलाई केलिए ही सोचते रहते है।

3. तुलसीदास के अनुसार संतोष.. धन की महानता क्या है ?

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास कहते है कि गाय, हाथी, घोडे, रत्न आदि कितने ही धन हमारे साथ रहने पर भी, संतोष रूपी धन के बिना ये सब निरूपयोग है। हमारे खजाना मे जितने धन होने पर भी जब संतोष रूपी धन हमारे जीवन में आता है तो, ये सब धन धूल के समान है। कवि का कहना है कि जीवन में धनवान होने से ज्यादा संतोष से रहना महान है। इससे हमे जीवन में संतोष का पता चलता है।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1. सोई ज्ञानी सोई गुनी, जन सोई दाता घ्यानि। तुलसी जाके चित्त भई, राग द्वेष का हानि।।

सोई - वही, जाके - जिसके, गुनि - गुणवान, राग - अनुराग, दाता - दानी, ध्यानि - भक्त, जन - लोग, चित्त - मन, हानि - भाव

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा तुलसीदास के दोहे से दिया गया है। तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण मक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके मॉ... बाप थे। रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्यहै। उनकी अन्य रचनाओं में कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई।

संदर्भ : मानव जीवन मे राग.. द्वेषों के बारे मे कहने के संदर्भ में कवि ने यह दोहा लिखा।

भाव : तुलसी दास इस दोहे में कहते है कि जिस व्यक्ति के मन में किसी के प्रति राग.. द्वेष की भावना नही होता है, वही व्यक्ति ज्ञानी, गुणी, दानी, ध्यानी होता है। इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति दूसरों के प्रति प्यार या वैर नहीं रखता है, वही अधिक ज्ञानी गुणवान, दानी और भगवान के भक्त बनता है।

विशेषता : मानव को सुखी रहने केलिए राग. द्वेषों को छोडने की सलाह दी गयी है।

2. पर सुख सम्पत्ति देखि सुनि जरहि जे जड बिनु आगि।
तुलसी तिनके भाग ते, हम कहें पुछत भागि।।

पर - दूसरो के, संपत्ति-धन, देखि-देख कर, जरहि-जलता है, जे-उसके, जड-सुनकर, बिनु-बिना, तिनके-उसके, भाग-भाग्य, कहाँ पूछति-कहाँ मिलता है

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा तुलसीदास के दोहे से दिया गया है। तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके मॉ... बाप थे। रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। उनकी अन्य रचनाओं में कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई।

संदर्भ: मानव जीवन में ईर्ष्या.. द्वेष से होने वाले नष्ट के बारे में बताने के संदर्भ में कवि ने यह दोहा लिखा।

भाव : कवि कहते है कि संसार मे जो व्यक्ति दूसरों के सुख.. संपत्ति देख कर या उनके बारे मे सुनकर जल जाता है, वही इस संसार में दुर्भाग्य है। जो व्यक्ति दूसरों के सुखों पर बिना आग के जल जाताहै, भाग्य में से भलाई भाग जाती है। इसका अर्थ है जो दूसरों के सुखो पर रोता है, वह कभी सुखी नही हो सकता है।

विशेषता : मानव को दूसरों के सुख संपत्ति पर ईर्ष्यालू न होने की सलाह दी गयी है।

3.तुलसी संत सुअंब तरू, फूलि.. फलहि पर...हेत।

इतते यह पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

संत... सज्जन व्यक्ति, सुअंब... मीठा आम, तरू. पेड, फूल. फलहि... फूलता है, फलता है, पर. हेत... दूसरों की मलाई, इतते..इस तरफ से, उतते.. उस तरफ से, पाहन.. पत्थर, हनत.. मारना,

तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान मे हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके माँ... बाप थे। रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। उनकी अन्य रचनाओं में कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई।

संदर्भ : सज्जन व्यक्तियों के गुणों के बारे में कहने के संदर्भ में कवि ने यह दोहा लिखा।

भाव : तुलसीदास कहते है कि सज्जन व्यक्ति और आम का पेड... दोनों एक समान है। हम आम लेने केलिए पेड पर पत्थर फेंकते हैं, लेकिन वह मीठे फल देता है। उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति को भी दूसरे लोग कितने कष्ठ पहुँचाने पर भी उनकी मलाई ही चाहता है। विशेषता : सज्जन व्यक्तियों की तुलना आम के पेड से की गयी है।

4.मुखिया मुख सो चाहिए, खान... पान को एक।

पालै पोसे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।

मुखिया... नेता, मुख.. मुँह, खान. पान.. खाना. पीना, पालै.पोशशै.. पालन. पोषण करना, सकल.. सारे, विवेक.. बुद्धि, सहित... साथ

कवि परिचय: प्रस्तुत दोहा तुलसीदास के दोहे से दिया गया है। तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके माँ... बाप थे।रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। उनकी अन्य रचनाओं में कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई। संदर्भ : नायक या नेता के लक्षणों को बताने के संदर्भ में कवि ने यह दोहा लिखा। भाव : तुलसीदास कहते है कि नेता या नायक को मानव शरीर में मुँह जैसा होना चाहिए। मानव शरीर में खाने पीने केलिए एकमात्र अंग मुँह है और उसके द्वारा जो शक्ति मिलती है, उससे शरीर के सभी अंगों का पोषण होता है। उसी प्रकार नेता को भी विवेक के साथ सभी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। विशेषता: नायक को मुँह जैसा रहकर अपने साथियों की देख भाल करने की बात कही गयी है।

5. गो..धन, गज.. धन, बाजि.. धन और रतन.. धन खान।

जब आवत संतोष.. धन, सब धन धूलि समान।।

गोधन... गायों की संपत्ति, गज. धन.. हाथियों की संपत्ति, बाजिधन... घोडों की सपत्ति, रतन. धन... हीरे, मोती आदि की संपत्ति, खाना.. रहना

कवि परिचय : प्रस्तुत दोहा तुलसीदास के दोहे से दिया गया है। तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। तुलसीदास भारतदेश के हिंदी के महान भक्त कवि माना जाता है। तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के राजापुर जिला बांदा नामक स्थान में हुआ। हुलसी और आत्माराम दुबे इनके माँ... बाप थे।

रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। उनकी अन्य रचनाओं में कवितावली, गीतावली, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, दोहावली आदि इनकी अन्य रचनाएँ है। सं 1623 में बनारस में उनकी मृत्यु हुई।

संदर्भ : संसार में सबसे मूल्यवान संपत्ति के बारे में बताने के संदर्भ में कवि ने यह दोहा लिखा।

भाव : तुलसीदास इस दोहे में कहते है कि गाय, हाथी, घोडे, मूल्यवान रत्न आदि जितने प्रकार की संपत्ति हमारे साथ रहने पर भी संतोषरूपी धन के बिना ये सब निरूपयोग है। जब संतोष रूपी धन हमारे पास आता है, तो ये सभी संपत्ति धूल के समान है। कवि का कहना है कि संसार में संतोष रूपी धन ही सबसे मूल्यवान है।विशेषता: संतोष रूपी धन के सामने संसार के अन्य सभी धन व्यर्थ कहा गया है।

आधुनिक कविता

Unit II

मातृभाषा प्रेम भरतेंदु हरिश्चंद्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस में पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरु था। वे एक कवि थे। बचपन में ही इनके मॉ.. बाप की मृत्यु हुई। हुई थी।। भारतीय नवजागरण के प्रसिद्ध रचनाकार भारतेंदु अपनी रचनाओं के द्वारा गरीबी, गुलामी, और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेंदु से माना जाता है।भारतेंदु हरिश्चंद्र को अनेक विधाओं पर पकड थी। वे एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा' आदि पत्रकाओं का संपादन किया। एक दौर में भारतेंदु की लोकप्रियता शिखर पर थी, जिससे प्रभावित होकर काशी के विद्वानो ने उन्हे 1880 में 'भारतेंदु की उपाधि दी। भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 6 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, श्री चंद्रावली, विषस्य विषमौषधम भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी प्रेम जोगिनी आदि उनके प्रमुख काव्य हैं।

मातृभाषा प्रेम

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, / बिन निज भाषा..ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन। / पै निज भाषा... ज्ञान बिन, रहत डीन के हीन।
उन्नति पूरी है तकहिं जब घर उन्नति होय। / निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ सब कोय।
निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न हवै है सोय। / लाख उपाय अनेक यो भले करे किन कोय।
इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग। / तबे बनत है सबन सों मिटत मूढता सोग।
और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात। / निज भाषा में कीजिए जो विद्या की बात।
तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय। / यह गुन भाषा और महं, कबहूँ नहीं होय।
विविध कला शिक्षित अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। / सब देसन से लै करहूँ, भाषा माहि प्रचार।
भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात। / विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।
सब मिल तासों छांडि कै, दूजे और उपाय। / उन्नति भाषा की करह, अहो भ्रातगन आय।

कठिन शब्दार्थः

निज भाषा... मातृ भाषा, हिय... हृदय, जतन.. यत्न, जदपि.. यद्यपि, प्रवीन..प्रवीण, सोग.. शोक, इक.. एक,, गुन.. गुण, जोग.. योग्य, निज..अपनी, हिय.. हृदय, सूल.. पीडा, प्रवील.. गुणवान, हीन.. मूर्ख, मति.. बुद्धि, मूढता... मूर्खता, प्रगड..प्रकट, लखात..

दिखाई पडता है, कोय... कोई, नाहिं.. नहीं, होय.. हो सकता है, विविध... अपार, माहि.. माध्यम से, देशन.. देशों में, अरू..और, जुद्ध.. युद्ध, समझन.. समझने,

1.मातृभषा प्रेम कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

कवि परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस में पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरू था। भारतेंदु हरिश्चंद्र एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा' आदि पत्रकाओं का संपादन किया।भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 6 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

सारांश : स्वतंत्रता संग्राम के समय हमारे नेताओं ने मातृभाषा की उन्नति की आवश्यकता का अनुभव करके उसका प्रचार किया। भरतेंदु हिंदी प्रेमी थे। उन्होंने इस कविता में मातृभाषा की उन्नति से होने वाले लाभों के बारे में इस प्रकार बताते है.....

कवि कहते हैं कि मातृभाषा की उन्नति ही किसी भी मानव के लिए सभी प्रकार की उन्नति का मूल है, मातृभाषा के ज्ञान के बिना हमारे हृदय की पीडा दूर नहीं होती। हम मले अंग्रजी में शिक्षित होने पर हमें सर्वगुणी मान लिया जाए। लेकिन अपनी भाषा के ज्ञान के अभाव में हम एक हीन भावना से घिरे रहेंगे। हमे दूसरे दर्जे के नागरिक माना जाएगा। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हम हीन ही हीन रह जाते है।

भारतेंदु के अनुसार जब हमारे घर की उन्नति होती है तभी हमारे समाज या हमारे देश की उन्नति पूरी होती। जिस प्रकार मानव शरीर को सुदृढ बनाता है, उसी प्रकार अपनी मातृभाषा की उन्नति के लिए प्रयत्न किए बिना कोई भी नही रह सकता। मातृभाषा की उन्नति किए बिना, कोई भी व्यक्ति अपनी उन्नति केलिए लाखों प्रयत्न करने पर भी कोई प्रयोजन नही है।

जब घर के सभी लोग एक ही भाषा, एक ही विचार, और एक के जैसा मिल.. जुल कर रहते है, तभी उनकी मूर्खता अर्थात अज्ञान, दुःख सब दूर हो जाते है। इससे सभी प्रकार के लाभ स्पष्ट दिखाई पडते है। इसलिए हम सब को मातृभाषा मे शिक्षा पाना जरूरी है।

कवि कहते है कि हमें मातृभाषा को सीखने से मिलने वाले लाभों के बारे मे जानना है। विविध प्रकार की कलाएँ, शिक्षा, अपार ज्ञान आदि अपनी मातृभाषा मे प्राप्त करके संसार के सभी देशों मे हमारी भाषा का प्रचार करना है।हमारे भारत देश में भिन्न भिन्न प्रकार की जातियों, धर्म और भाषाओं के लोग रहते है जिससे कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। इन ब समस्याओ को दूर करने हेतु सब को एक भाषा की आवश्यकता है। इसके बिना कोई दूसरा उपाय नहीं है। नहीं तो कोई विदेशी भाषा हमारे देश में अधिकार जमाने की संभावना है। इसलिए हम सब को अपनी मातृभाषा की उन्नति केलिए प्रयत्न करना है। विशेषता: प्रस्तुत कविता के द्वारा देश. प्रेम औरभाव व्यक्त किया गया है। साथ ही मातृभाषा की उन्नति की आवश्यकता मालूम होती है।

लघु प्रश्नोत्तर :

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का कवि परिचय लिखिए ?

भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस में पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरू था। वे एक कवि थे। बचपन में ही इनके मॉ.. बाप की मृत्यु हुई थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र को अनेक विधाओं पर पकड थी। वे एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा आदि पत्रकाओं का संपादन किया।

भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 6 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

2. मातृभाषा की उन्नति से क्या प्रयोजन है ?

मातृभाषा की उन्नति ही किसी भी मानव के लिए सभी प्रकार की उन्नति का मूल है, मातृभाषा के ज्ञान के बिना हमारे हृदय की पीडा दूर नही होती। मातृभाषा की उन्नति ही किसी भी मानव के लिए सभी प्रकार की उन्नति का मूल है, मातृभाषा के ज्ञान के बिना हमारे हृदय की पीडा दूर नहीं होती। जब हमारे घर की उन्नति होती है तभी हमारे समाज या हमारे देश की उन्नति पूरी होती। जिस प्रकार मानव अपने शरीर की उन्नत अर्थात अपने शरीर को सुदृढ बनाता है, उसी प्रकार अपनी मातृभाषा की उन्नति के

लिए प्रयत्न किए बिना कोई भी नही रह सकता। जब हमारे घर की उन्नति होती है तभी हमारे समाज या हमारे देश की उन्नति पूरी होती। जिस प्रकार मानव अपने शरीर की उन्नत अर्थात अपने शरीर को सुदृढ बनाता है, उसी प्रकार अपनी मातृभाषा की उन्नति के लिए प्रयत्न किए बिना कोई भी नही रह सकता।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ

1.निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, / बिन निज भाषा.. ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन। / पै निज भाषा... ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

कवि परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों मातृभाषा प्रेम नामक कविता से दी गयी है। इसके कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र है। भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस मे पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरू था। भारतेंदु हरिश्चंद्र एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा' आदि पत्रकाओं का संपादन किया।

भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 8 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

संदर्भ : मातृभाषा की उन्नति से होने वाले लाभों के बारे मे बताने के संदर्भ में कवि ने ये पंक्तियों लिखा। भाव : कवि कहते हैं कि मातृभाषा की उन्नति ही किसी भी मानव के लिए सभी प्रकार की उन्नति का मूल है, मातृभाषा के ज्ञान के बिना हमारे हृदय की पीडा दूर नही होती। हम भले अंग्रजी में शिक्षित होने पर हमें सर्वगुणी मान लिया जाए। लेकिन अपनी भाषा के ज्ञान के अभाव में हम एक हीन भावना से घिरे रहेंगे। हमे दूसरे दर्जे के नागरिक माना जाएगा। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हम हीन ही हीन रह जाते है।

विशेषता : मातृभाषा की उन्नति की अवश्यकता के बारे में कहा गया है।

2. इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग। / तबे बनत है सबन सॉ, मिटत मूढता सोग।
और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात। / निज भाषा में कीजिए जो विद्या की बात।

कवि परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों मातृभाषा प्रेम नामक कविता से दी गयी है। इसके कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र है। भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस मे पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरू था। भारतेंदु हरिश्चंद्र एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा' आदि पत्रकाओं का संपादन किया। भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 8 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

संदर्भ : सभी देश वासी एक ही भाषा को अपनाने से होनेवाले लाभों के बारे में कहने के संदर्भ में कवि ने ये पंक्तियों लिखा।भाव : कवि कहते है कि जब घर के सभी लोग एक ही भाषा, एक ही विचार, और एक के जैसा मिल.. जुल कर रहते है, तभी उनकी मूर्खता अर्थात अज्ञान, दुःख सब दूर हो जाते है। इससे सभी प्रकार के लाभ स्पष्ट दिखाई पडते है। इसलिए हम सब को मातृभाषा मे शिक्षा पाना जरूरी है।

विशेषता: सभी देश वासियों को एक ही भाषा अपना कर मातृभाषा में शिक्षा पाने की सलाह दी गयी है।

3. भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।
सब मिल तासों छांडि कै, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करह, अहो भ्रातगन आय।

कवि परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों मातृभाषा प्रेम नामक कविता से दी गयी है। इसके कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र है। भारतेंदु हरिश्चंद्र 9 सितंबर 1850 बनारस मे पैदा हुए। उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था और भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनके पिता का नाम गोपालचंद्र गुरू था। भारतेंदु हरिश्चंद्र एक गद्यकार, कवि, नाटककार, पत्रकार एवं व्यंग्यकार थे। ये अपनी मेहनत से संस्कृत, पंजाबी, मराठी, उर्दू, बंगला, गुजराजी आदि भाषाएँ सीखी। उन्होंने 'बाल विबोधिनी', 'हरिश्चंद्र' और 'कवि वचन सुधा आदि पत्रकाओं का संपादन

किया। भारतेंदु के विशाल साहित्यिक योगदान के कारण सन 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। 6 जनवरी 1885 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

संदर्भ: भारत की भिन्न जातियों और धर्मों के लोगों को एक ही भाषा अपनाने की सलाह देते हुए कवि ने ये पंक्तियाँ लिखा। भाव: हमारे भारत देश में भिन्न.. भिन्न प्रकार की जातियों, धर्म और भाषाओं के लोग रहते है जिससे कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। इन सब समस्याओ को दूर करने हेतु सब को एक भाषा की आवश्यकता है। इसके बिना कोई दूसरा उपाय नहीं है। नहीं तो कोई विदेशी भाषा हमारे देश में अधिकार जमाने की संभावना है। इसलिए हम सब को अपनी मातृभाषा की उन्नति केलिए प्रयत्न करना है। विशेषता: भारत देश में व्याप्त भिन्नता में भाषागत एकता लाने की कोशिश की गयी है।

2. भिक्षुक - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य से छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1887 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव मे हुआ। उनके पिताजी पं. रामसहाय त्रिपाठी गढाकोला जिला उन्नव के जमादार थे। निराला के बचपन का नाम सूर्यकुमार तेवारी था। आरंभिक शिक्षा के बाद उनकी पढाई आगे नही बढ़ी। वे स्वाध्याय से हिंदी सीखी। वे रामकृष्ण मिशन से जुडकर समन्वय और बाबू महादेव प्रसाद सेठ से मिलकर मतवाला पत्रिका का संपादन किया। निराला की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, गद्यकाव्य आदि सभी विधाओं में रचनाएँ की। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिभा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।

उनके काव्य चिंतन और व्यक्तित्व पर भारतीय अद्वेत दर्शन और रामकृष्ण परमहंस का प्रभाव दिखई पडता है। प्रेम, करूणा, राष्ट्र प्रेम और प्रकृति वर्णन और शोषण का विरोध आदि उनकी रचनाओं के मुख्य विषय है। निराला की भाषा शुद्ध खडीबोली है जिसमे संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रचुरता है। निराला ने छंद विधान को अस्वीकार कर मुक्तक छंद का समर्थन किया। महा कवि निराला की मृत्यु सन् 1961 में हुई।

भिक्षुक

वह आता... / दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक, / चल रहा लकुटिया टेक, / मुटठी भर दाने को, भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता, / दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए, / बाएँ से वे मलते हुए पेट चलते है,
और दाहिना दया.... दृष्टि पाने की और बढाए।
भूख से सूख ओंठ जब जाते, / दाता.. भाग्य विधाता से क्या पाते ? घूँट
आँसुओं को पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सडक पर खड़े हुए, / और झंपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं, अड़े हुए।

कठिन शब्दार्थ :

टूक... टुकडे, कलेजा... हृदय, लकुटिया.. डंडा / लकडी, दया.. दृष्टि... दीन भावना, दाता... दानी, घूँट... आँसू, टेक.. पकडना, पछताना... पश्चात्ताप करना, झपट लेना...छीन लेना, अडना.. खडे होना, सींचना.. भिगोना

1. भिक्षुक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

कवि परिचय : हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य से छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1887 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव मे हुआ। उनके पिताजी पं. रामसहाय त्रिपाठी गढाकोला जिला उन्नव के जमादार थे। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिभा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।सारांश : भिक्षुक कविता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला है। इस कविता में कवि ने एक बिकारी की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।

निराला एक भिक्षुक को देखते है। उसकी दयनीय ऑखें देखने वाले के दिल को टुकडे करते हैं। वह भिक्षुक अपनी दयनीय दशा पर पछताते हुए भीख माँगने केलिए रास्ते पर चल रहा है। उसकी दयनीय स्थिति को देख कर किसी के भी मन पर दया और करूणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। भूख की पीडा के कारण उसके पेट और पीठ दोनों मिल गए हैं। वह कमजोर स्थिति में भूख की आग बुझाना चाहता है। वह लकडी के सहारे खडे होकर रोटी की आशा में अपने फटे हुए झोले का मुँह फैलाता है।

उसके साथ दो बच्चे भी है। वे भी भूख से पीडित हैं। वे दोनों एक हाथ से पेट मलते हुए, दूसरा हाथ फैला कर दयनीय आँखों से भीख माँगते है। उनकी आँठ भूख से सूख गए हैं। कभी.. कभी वे सडक पर खडे होकर जूटे पत्ते चाटने लगते है। उनके हाथ से जूटे पत्ते जपटने केलिए कुत्ते भी अडे और खडे हुए है। विशेषता : भिक्षुक कविता में कवि ने मिखारी की दीन दशा का बडा ही मार्मिक चित्र खींचा है। भिखारी की करूण दशा का सहज चित्रण मन को छू लेती है।

लघु प्रश्नोत्तर :

1. निराला जी का साहित्यिक परिचय दीजिए ?

निराला की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, गद्यकाव्य आदि सभी विधाओं में रचनाएँ की। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिभा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।

हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य उसे छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। उनके काव्य चिंतन और व्यक्तित्व पर भारतीय अद्वेत दर्शन और रामकृष्ण परमहंस का प्रभाव दिखई पडता है। प्रेम, करूणा, राष्ट्र प्रेम और प्रकृति वर्णन और शोषण का विरोध आदि उनकी रचनाओं के मुख्य विषय है।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ :

1. वह आता... / दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

कवि परिचय :प्रस्तुत पंक्तियों भिक्षुक नामक कविता से दिए गए है। इस कवता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी है। हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य से छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1887 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव मे हुआ। उनके पिताजी पं. रामसहाय त्रिपाठी गढाकोला जिला उन्नव के जमादार थे। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिमा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।

संदर्भ : मिक्षुक की दयनीय स्थिति का वर्णन करने के संदर्भ में कवि ने ये पंक्तियों लिखा।

भाव: भिक्षुक की दयनीय आँखें देखने वाले के दिल को टुकडे करते हैं। वह भिक्षुक अपनी दयनीय दशा पर पछताते हुए भीख माँगने केलिए रास्ते पर चल रहा है। उसकी दयनीय स्थिति को देख कर किसी के भी मन पर दया और करूणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। भूख की पीडा के कारण उसके पेट और पीठ दोनों मिल गए हैं।

विशेषता : भिक्षुक की दीन दशा का वर्णन किया गया है। उसकी स्थिति से कवि का मन दुःखित हो उठा।

2. मुटठी भर दाने को, भूख मिटाने को, / मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता,
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

कवि परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों भिक्षुक नामक कविता से दिए गए है। इस कवता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी है। हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य से छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1887 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव मे हुआ। उनके पिताजी पं. रामसहाय त्रिपाठी गढाकोला जिला उन्नव के जमादार थे। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिभा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।

संदर्भ : भिक्षुक की भूख भरी दीनावस्था का वर्णन करने के संदर्भ में कवि ने ये पंक्तियों लिखा।

भाव : भूख की पीडा के कारण भिक्षुक के पेट और पीठ दोनों मिल गए हैं। वह कमजोर स्थिति में भूख की आग बुझाना चाहता है। वह लकडी के सहारे खडे होकर रोटी की आशा में अपने फटे हुए झोले का मुँह फैलाता है।

विशेषता : भिक्षुक की कमजोर दशा का वर्णन किया गया है।

3. चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सडक पर खडे हुए, और झंपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं, अडे हुए।कवि परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों भिक्षुक नामक कविता से दिए गए है। इस कवता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी है। हिदी साहित्य के आधुनिक रचनाकार निराला ने अपने साहित्य से छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद को समृद्ध बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1887 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव मे हुआ। उनके पिताजी पं. रामसहाय त्रिपाठी गढाकोला जिला उन्नव के जमादार थे। परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख काव्य है। अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती आदि उनके उपन्यास है। लिली, सकुल की बीबी कहानी संग्रह और प्रबंध प्रतिभा, चाबुक आदि निबंध संग्रह है।

संदर्भ : भिक्षुक के जूटे पत्ते चाटने की कारूणिक दशा का वर्णन करने के संदर्भ में कवि ने ये पंक्यिों लिखा।

भाव: भिक्षुक और उसके दो बच्चे की ओंठ भूख से सूख गए हैं। कभी.. कभी वे सडक पर खडे होकर जूटे पत्ते चाटने लगते है। उनके हाथ से जूटे पत्ते जपटने केलिए कुत्ते भी अडे और खडे हुए है।

विशेषता : भिक्षुक और उसके दो बच्चे की घोर भूख की भयंकर दशा का चित्रण किया गया है।

3.मादा भ्रूण - रजनी तिलक

रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली मे एक दलित परिवार में हुआ। पिता दर्जी का काम करते थे। पविार की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी जिसका असर उसकी शिक्षा पर भी पडी। किसी तरह उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी करके आइ टी आइ में प्रवेश किया। वहीं से उसकी समाजिक संघर्ष शुरू हुई। लैंगिक भेदभाव पर छात्राओं के आंदोलन का नेतृत्व किया। तब से वह नारी मुक्त आंदोलन, दलित महिला आंदोलन, मानवाधिकार आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। वे देश के विभिन्न संस्थाओं से संबद्ध है।

उनकी पहचान एक कवयित्री लेखिका की भी है। उन्होंने 'भारत की पहली शिक्षिका' के रूप में सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखी। 'अपनी जमीन अपना आसमान' उनकी आत्मकथा है। 'पदचाप' और 'हवा से बेचैन युवतियाँ' उनके काव्य संग्रह है। 'बेस्ट आफ करवाचौथ' उनका प्रकाशित कहानी संग्रह है। 30 मार्च 2018 में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

मादा भ्रूण

युवा दम्पति / विवाह होते ही / बच्चों की तश्वीरें गढने लगते हैं
मादा भ्रूण पाकर / रिश्ते चटकने लगते है / मादा.. जीव के
गर्भ में आते ही / अल्टरा साउंड की मशीनें / समाज की नजरें
माँ की ममता / खामोश उपेक्षित हो उठती हैं। /
मादा भ्रूण बीज / अंकुरण को संघर्षरत / पेशेवर डाक्टर
समाज की नजरें / माँ का वात्सल्य / संवेदनहीन खामोश हो उठता है।
निरापद भ्रूण / गर्भ से मृत्यु तक / शब्द से शून्य तक
विकृत द्वंद्वों के चकवातों में / जूझ कर / अंकुरित हो उठता है
तब धरा की सांकले / चट्टान पितृसत्ता को / खंडित कर
लिखती है / नये युग का शिला लेख।

कठिन शब्दार्थ :

मादा स्त्री, भ्रूण जीव, तश्वीर चित्र, गढना :इकटठा करना, रिश्ते संबंध, चटकना तोडना, खामोश : चुप/मौन उपेक्षित : तिरस्कृत / उदासीन, अंकुरण अंकुर में ही, संघर्ष : समर, पेशेवर : कर्तव्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, वात्सल्य : मॉ का प्यार, संवेदन अनुभूति/मन में होनेवाला बोध, निरापद बिना अपराध, विकृत बिगडा/दूषित, द्वंद्व : मानसिक संघर्ष, चकवात बवंडर, जूझ लडाई, सांकले : संकट चटट्रान: पत्थर की बडी शिला, पितृसत्ता पिता शासित,

1. रजनी तिलक का कवयित्री परिचय लिखए ?

रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली में एक दलित परिवार में हुआ। पिता दर्जी का काम करते थे। पविार की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी जिसका असर उसकी शिक्षा पर भी पड़ी। वह नारी मुक्त आंदोलन, दलित महिला आंदोलन, मानवाधिकार आंदोलन में सकिय भाग लिया। वे देश के विभिन्न संस्थाओं से संबद्ध है।

उनकी पहचान एक कवयित्री लेखिका की भी है। उन्होंने 'भारत की पहली शिक्षिका' के रूप में सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखी। 'अपनी जमीन अपना आसमान' उनकी आत्मकथा है। 'पदचाप' और 'हवा से बेचैन युवतियों' उनके काव्य संग्रह है। 'बेस्ट आफ करवाचौथ' उनका प्रकाशित कहानी संग्रह है। 30 मार्च 2018 में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

2. 'मादा भ्रूण कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

कवयित्री परिचय : मादा भ्रूण कविता के कवयित्री श्रीमती रजनी तिलक है। रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली मे एक दलित परिवार में हुआ। उन्होंने 'भारत की पहली शिक्षिका' के रूप में सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखी। 'अपनी जमीन अपना आसमान' उनकी आत्मकथा है। 'पदचाप' और 'हवा से बेचैन युवतियों उनके काव्य संग्रह है। 'बेस्ट आफ करवाचौथ' उनका प्रकाशित कहानी संग्रह है। 30 मार्च 2018 में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

सारांश : प्रस्तुत कविता "मादा भ्रूण" में कवयित्री अल्टरा साउंड की मशीनों द्वारा गर्भस्थ शिशु का लिंग पहचान कर, मादा जीव की हत्या करने पर अपनी संवेदना व्यक्त कर रही है।कवयित्री कहती है कि युवा दम्पति विवाह होते ही, बच्चों की तश्वीरें गढ़ने लगते हैं। मादा.. जीव गर्भस्थ होने पर उनकी भावनाएँ और उनके रिश्ते चटकने लगते है। शिशु को गर्भ में प्रवेश करते ही उनकी नजरें अल्टरा साउंड मशीन की ओर दौडते है। मशीनों के द्वारा जीव की लिंग पहचान होती है। पेशेवर डाक्टर भी मादा शिशु के अंकुर को पहचान कर माँ को बताता है। माँ का वात्सल्य भी संवेदन शील बनकर खामोश रह जाता है। मानव मादा शिशु की हत्या कर रहा है। संसार पर अपना आधिपत्य चला रहा है। लेकिन मादा शिशु जन्म से मरण तक, शब्द से शून्य तक, सृष्टि से रचना तक विकृत मानसिक संघर्षों से जूझता रहती है। इसी संघर्ष रूपी बवंडर से एक नया अंकुर जन्म लेती है। तब इस धरती की सांकले जैसे पितृ सत्ता रूपी चटट्टान को खंडित कर नये युग का शिला लेख लिखती है।

विशेषता: कवयित्री कहती है कि वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा गर्भस्थ शिशु का लिंग निर्धारण कर मादा भ्रूण की हत्या माहा पाप है। साथ ही पितृ सत्ता का अंत भी चाहती है।

संदर्भ सहित व्याख्याएँ :

1. अल्टरा साउंड
पेशेवर डाक्टर
माँ का वात्सल्य
संवेदनहीन खामोश हो उठता है।

कवयित्री परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों "मादा भ्रूण" नामक कविता से दिए गए है। इस कविता के कवयित्री श्रीमती रजनी तिलक है। रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली में एक दलित परिवार में हुआ। उन्होंने 'भारत की पहली शिक्षिका के रूप में सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखी। 'अपनी जमीन अपना आसमान उनकी आत्मकथा है। 'पदचाप' और 'हवा से बेचैन युवतियों उनके काव्य संग्रह है। 'बेस्ट आफ करवाचौथ उनका प्रकाशित कहानी संग्रह है। 30 मार्च 2018 में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

संदर्भ : अल्टरा साउंड मशीन के द्वारा लिंग निर्धारण करने की बात कहने के संदर्भ में कवयित्री ने ये पंक्तियों लिखी।

भाव: शिशु को गर्भ में प्रवेश करते ही युवा दंपति की नजरें अल्टरा साउंड मशीन की ओर दौडते है। मशीनों के द्वारा जीव की लिंग पहचान होती है। पेशेवर डाक्टर भी मादा शिशु के अंकुर को पहचान कर माँ को बताता है। मॉ का वात्सल्य भी संवेदन शील बनकर खामोश रह जाता है।

विशेषता : आधुनिक संसार में गर्भस्थ शिशु का लिंग निर्धाण अधिक होने की बात कही गयी है।

2. अंकुरित हो उठता है / तब घरा की सांकले / चट्टान पितृसत्ता को
खंडित कर / लिखती है / नये युग का शिला लेख।

कवयित्री परिचय : प्रस्तुत पंक्तियों "मादा भ्रूण" नामक कविता से दिए गए है। इस कविता के कवयित्री श्रीमती रजनी तिलक है। रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली में एक दलित परिवार में हुआ। उन्होंने 'भारत की पहली शिक्षिका के रूप में

सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखी। 'अपनी जमीन अपना आसमान उनकी आत्मकथा है। 'पदचाप' और 'हवा से बेचैन युवतियों उनके काव्य संग्रह है। 'बेस्ट आफ करवाचौथ उनका प्रकाशित कहानी संग्रह है। 30 मार्च 2018 में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

संदर्भ : पितृ सत्ता समाज का अंत के बारे में कहने के संदर्भ में कवयित्री ने ये पंक्तियों लिखी।

भाव : मादा शिशु जन्म से मरण तक, शब्द से शून्य तक, सृष्टि से रचना तक विकृत मानसिक संघर्षों से जूझता रहती है। इसी संघर्ष रूपी बवंडर से एक नया अंकुर जन्म लेती है। तब इस धरती की सांकले जैसे पितृ सत्ता रूपी चटान को खंडित कर नये युग का शिला लेख लिखती है।

विशेषता: इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री मातृ सत्ता समाज की आंकांक्षा व्यक्त करती है।

UNIT - III

सामान्य निबन्ध

1. विद्यार्थीं और अनुशासन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। किसी समाज के निर्माण में अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुशासन ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है तथा उसे समाज में उत्तम स्थान दिलाने में सहायता करता है। विद्यार्थी जीवन में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह वह समय होता है जब उसके व्यक्तित्व का निर्माण प्रारंभ होता है। दूसरे शब्दों में, विद्यार्थी जीवन को किसी भी मनुष्य के जीवनकाल की आधारशिला कह सकते हैं क्योंकि इस समय वह जो भी गुण अथवा अवगुण आत्मसात् करता है उसी के अनुसार उसके चरित्र का निर्माण होता है।

कोई भी विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता प्राप्त नही कर सकता है। अनुशासन प्रिय विद्यार्थी नियमित विद्यालय जाता है तथा कक्षा में अध्यापक द्वारा कही गई बातों का अनुसरण करता है। वह अपने सभी कार्यों को उचित समय पर करता है। वह जब किसी कार्य को प्रारंभ करता है तो उसे समाप्त करने की चेष्टा करता है।

अनुशासन में रहने वाले विद्यार्थी सदैव परिश्रमी होते हैं। उनमें टालमटोल की प्रवृत्ति नही होती तथा वे आज का कार्य कल पर नहीं छोडते हैं। उनके यही गुण धीरे-धीरे उन्हे सामान्य विद्यार्थियों से एक अलग पहचान दिलाते है।

अनुशासन केवल विद्यार्थियों के लिए ही आवश्यक नहीं हैं, जीवन के हर क्षेत्र में इसका उपयोग है लेकिन इसका अभ्यास कम उम्र में अधिक सरलता से हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि यदि विद्यार्थी जीवन से ही नियमानुसार चलने की आदत पड़ जाए तो शेष जीवन की राहें सुगम हो जाती हैं।

ये विद्यार्थी ही आगे चलकर देश की राहे संभालेंगे, कल इनके कंधों पर ही देश के निर्माण की जिम्मेदारी आएगी अतः आवश्यक है कि ये कल के सुयोग्य नागरिक बनें और अपनी जिन्मेदारियों का निर्वहन धैर्य और साहस के साथ करे। वर्तमान में अनुशासन का स्तर काफी गिर गया हैं। अनुशासनहीनता के अनेक कारण हैं। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के दौर में आज लोग बहूत ही व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिससे माता-पिता अपनी संतान को वांछित समय नहीं दे पाते हैं। इसी कारण बच्चों में असंतोष बढ़ता है जिससे अनुशासनहीनता उनमें जल्दी घर कर जाती है।

इसी प्रकार विद्यालय के कुछ छात्र जब परिक्षा या किसी प्रतिस्पर्धा में असफल हो जाते हैं तो वे कुंढा से ग्रसित हो जाते हैं। उनका असंतोष दूसरे विद्यार्थियों के अनुशासन पर भी प्रभाव डालता है। देश में बढ़ती हुई जनसंख्या भी अनुशासनहीनता के लिए उत्तरदायी है।

देश के कुछ विद्यालयों की स्थिति ऐसी हो गई है कि 35-40 की क्षमता वाली कक्षाओं में 150 विद्यार्थी पढ रहे हैं ? कोई भी व्यक्ति स्वतः अनुमान लगा सकता है कि एक अध्यापक किस प्रकार सीमित समय में इतने बच्चों को ठीक ढंग से शिक्षा प्रदान कर सकता है।

यह प्रामाणिक तथ्य है कि अनुशासन के बिना मनुष्य अपने उद्देश्य की प्राप्ति नही कर सकता है। विद्यार्थी जीवन में इसकी आवश्यकता इसलिए सबसे अधिक है क्योंकि इस समय विकसित गुण-अवगुण ही आगे चलकर उसके भविष्य का निर्माण करते हैं। अनुशासन के महत्व को समझने वाले विद्यार्थी ही आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर व ऊँचे पदों पर आसीन होते हैं।

परंतु वे अनुशासनहीनता के पथ पर चलते हैं तो वे शीघ्र ही कुसंगति के कुचक्र में फँस जाते हैं और सच्चाई तथा न्याय के मार्ग से विचलित हो जाते हैं। फलस्वरूप जीवन में वे ईर्ष्या, लालच, घृणा, क्रोध आदि बुराइयों के अधीन होकर अपना भविष्य अंधकारमय बना लेते हैं।

अनुशासनहीनता को अच्छी शिक्षा वे उचित वातावरण देकर नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थी उज्जल भविष्य की और अग्रसित हो सकें। अनुशासन में रहने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि राष्ट्र की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. विद्यार्थी और अनुशासन पर निबंधं लिखिए।
2. अनुशासन का महत्व बताईए।

2. विश्व भाषा के रूप में हिंदी

अंतरराष्ट्रीय पटल पर हिन्दी आज विश्व की प्रतिष्ठित भाषा बन गई है। साथ ही विश्व में बसे हुए भारतियों की भी संपर्क भाषा है। प्रवासी भारतीय तो उसे अपनी अस्मिता का प्रतीक मानते है। भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी के विस्तार की संभावनाएँ अधिक बढ़ गई है तो दूसरी और चुनौतियां भी हैं।

जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने - समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है।

"विश्व भाषआ के रूप में हिंदी एवं राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की प्रतिष्ठा को आज के इस भूमंडलीकरण और उदारीकरण के युग में अलग अलग न मानते हुए अन्योंयाश्रित मानकर हमें ठोस कदम उठाने हैं।"

विश्व के कई देशों में व्यापक रूप से हिंदी भाषा का प्रचार हो रहा है। आज विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अधिक प्रयोग हो रहा है।

विश्व में हिंदी बोलनेवालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। हिंदी चीनी भाषा के बाद विश्व की दूसरे स्थान की भाषा है। एकशोध के अनुसार विश्व में सबसे अधिक बोलनेवाले और समझनेवाले की भाषा हिंदी है। लक्ष्मीकांत वर्मा का कथन है कि "हिंदी को एक विशाल जनसमूह के राजकाज और बातचीत को चलाना नहीं है, बल्कि उसी को शिक्षा का माध्यम बनाना है।" भारत के अलावा हिंदी बोलनेवाले और समझनेवाले सुरिनाम, त्रिनीडाड, दुबई, फिजी, मॉरीशसस कुबैत, संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, रूस, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में मिलते हैं। विदेशों के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। हिंदी के साहित्यिक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक नया आयाम उसके अंतरराष्ट्रीय पक्ष के साथ भी जुड़ता है। डॉ. शिव गोपाल मिश्र का कथन है कि "विश्व भाषा का अर्थ है विश्व की अन्य भाषाओं के समकक्ष होना, उन्हीं जैसे साहित्य का सृजन और विश्वभर में भाषा के द्वारा वृतिक या व्यवसायिक अवसर उत्पन्न करना।" विश्व के अनेक देशों में हिंदी के साध्यम से कविता कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा अन्य विधाओं में साहित्य मृजन काफी मात्रा में हो रहा है। इस साहित्य में विभिन्न देशों की मातृभूमि की गंध, वहां की जीवन शैली और वहां के लोकोक्तियों का सौंदर्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। इनकी हिंदी की व्याकरण रचना की प्रकृति चाहे भारत की हिंदी के समान है किंतु उसकी बनावट में विभिन्न देशों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की छाप दिखाएं देती है। कृष्ण कुमार का कथन है कि "आज यह आवश्क हो गया है कि इन देशों में रचित हिंदी साहित्य को इतिहास लेखन औरआलोचनात्मक मूल्यांकन में स्थान दिया जाए तभी हिंदी साहित्य सही अर्थों में अंतरराष्ट्रीय साहित्य का रूप ले पाएगा।"

हिंदी भाषा अनेक देशों की समाज एवं संस्कृति के अंग के रूप में जुड़ी है। प्रवासी भारतीयों में हिंदी के ऐतिहासिक संबंधों की सामाजिक, सांस्कृतिक कड़ी और उनकी भावात्मक एकता का मूल आधार माना जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. विश्व भाषा के रुप में हिन्दी निबंध लिखिए।
2. विश्व मे हिंदी भाषा का महत्व बताइए।

3. पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण का तात्पर्य मानव गतिविधियों के कारण पर्यावरण में किसी भी अवांछित सामग्री के शामिल होने से है जो पर्यावरण और पारिस्थितिकी में अवांछनीय परिवर्तन का कारण बनता है। उदाहरण के लिए, स्वच्छ जल सोतों जैसे टैंकों, नदियों आदि में सीवेज का जल को मुक्त करना, जल प्रदूषण का एक उदाहरण है।

पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न कारकों को प्रदूषक कहा जाता है। प्रदूषक रसायन, जैविक सामग्री या भौतिक चीजें हो सकते हैं जो दुर्घटनावश पर्यावरण में शामिल हो जाते हैं जो लोगों और अन्य जीवित चीजों के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हानिकारक होते हैं।

पर्यावण प्रदूषण के प्रभाव :

पर्यावरण प्रदूषण पृथ्वी पर जीवन को बनाये रखने वाले मूल कारकों को प्रभावित करता है, जैसे कि हम जिस वायु को श्वसन द्वारा ग्रहण करते हैं, जिस जल को पीते हैं और बड़े पैमाने पर जिस पारिस्थितिकी तंत्र पर हम निर्भर हैं। इस प्रकार, यह पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा उत्पन्न करते है। प्रदूषण मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यद्यपि यह पूरे समाज की समग्र कल्याण को प्रभावित करता है लेकिन गरीब, बच्चे, महिलाएं आदि जैसे कमजोर वर्गों पर इसका असमान रुप से प्रभाव अधिक होता है।

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन के अनुसार, जल प्रदूषण से मछली पकड़ने, कृषि, जल-सघन उद्योगों आदि क्षेत्रों में होने वाले नुकसान के कारण 2050 तक भारत की जीडीपी में लगभग 6% का नुक्सान होगा। पर्यावरण प्रदूषण के अन्य सामाजिक-आर्थिक प्रभावों में घटे कृष उपज के कारण खाद्य असुरक्षा, जल संकट के कारण जबरन प्रवासन आदि शामिल हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण :

मानव जनसंख्या में तीव्र वृद्धि ने मानवजनित गतिविधियों को कई गुना बढ़ा दिया है। इनमें से अधिकांश गतिविधियाँ, किसी न किसी तरह से पर्यावरण में कुछ अवांछित चीजें को जोड़ती हैं। हाल के दिनों में तेजी से शहरीकरण के कारण निर्माण गतिविधियों में वृद्धि हुई हैं। निर्माण गतिविधियाँ विभिन्न तरीकों से पर्यावरण प्रदूषण को फैला रहें है, जैसे वायु में धूल के कण, अपशिष्ट पदार्थों का निर्माण आदि।

बढ़ती आबादी और शहरीकरण के कारण परिवहन गतिविधियाँ में भी वृद्धि हुई हैं। यह अपने आप में प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत है। हाल ही में औद्योगीकरण पर बढ़ते फोकस के कारण औद्योगिक अपशिष्ट और उत्सर्जन तेजी से बढ़ रहा है, और इसलिए पर्यावरण प्रदूषण हो रहा है। कुछ कृषि गतिविधियाँ भी पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनती हैं।

उदाहरण के लिए, उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से न केवल मिट्टी का प्रदूषण होता है बल्कि आस-पास के जल निकायों में भी रिसाव के कारण होता है। पर्यावरण प्रदूषण के कई अन्य कारण हैं, जैसे जीवाश्म ईंधनों का जलाना, रसायनों का बढ़ता उपयोग आदि।

पर्यावण प्रदूषण के प्रकार :

प्रदूषकों के स्रोत और गंतव्य के आधार पर, प्रदूषण विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं;

वायु प्रदूषण :

* विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, वायु प्रदूषण किसी भी रामायनिक, भौतिक या जैविक एजेंट द्वारा अंतरिक या बाहरी वातावरण का संदूषण है जो वातावरण की प्रकृतिक विशेषताओं को संशोधित करता है।

जल प्रदूषण :

जल प्रदूषण जल निकायों में अवांछित पदार्थों के निर्वहन को • संदर्भित करता है जैसे कि झीलें, धाराएँ, नदियाँ और महासागर जैसे जल निकायों में अवांछित पदार्थों की इतनी मात्रा जो जल के लाभकारी उपयोग या पारिस्थितिक तंत्रों के प्राकृतिक कामकाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

जब हानिकारक रसायन या सूक्ष्मजीव किसी धारा, नदी, ढील, समुद्र, जलभृत या अन्य जल निकाय को दूषित करते हैं, तो जल की गुणवता खराब हो जाती है और यह मनुष्यों और पर्यावरण दोनों के लिये विषाक्त हो जाता है।

जल प्रदूषण के परिणामस्वरूप घुलित ऑक्सीजन (डीओ) का स्तर गिर जाता है तो जैविक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) बढ़ जाती है परिणामस्वरूप जलीय प्रजातियाँ नष्ट होने लगती हैं, आदि।

कारण :

* कृषि जल प्रदूषण के प्राथमिक स्रोतों में से एक है। खेतों और पशुधन कार्यों से निकलने वाला पशु अपशिष्ट, कीटनाशक और उर्वरक पोषक तत्वों एवं रोगजनकों जैसे बैक्टीरिया और वायरस को हमारे जलमार्गों में बहा दिया जाता हैं।

* संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया के 80 प्रतिशत से अधिक अपशिष्ट जल बिना उपचार या पुनः उपयोग के पर्यावरण में वापस प्रवाहित कर दिया जाता है।

* अनुमानित 10 लाख टन तेल का लगभग आधा हिस्सा समुद्री वातावरण में फैल जाता है।

* यूरेनियम खनन, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और उन अस्पतालों द्वारा उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ जो शोध और चिकित्सा के लिए रेडियोधर्मी सामग्री का उपयोग करते हैं। ये अपशिष्ट हजारों वर्षों तक पर्यावरण में बने रह सकते हैं, जिससे निपटान एक बड़ी चुनौती बन जाती है।

जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए किये गए अंतराराष्ट्रीय उपायः

समुद्री प्रदूषण को कम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन,

समुद्र में कचरे के निपटान पर कन्वेंशन या लंदन कन्वेंशन (1972),*

WHO के आंकड़ों के अनुसार, दुनिया की 99 प्रतिशत आबादी ऐसी वायु में सांस लेती है जिसमें उच्च स्तर के प्रदूषक होते हैं और WHO के दिशानिर्देशों की सीमा से अधिक होते हैं, जिसमें निम्न और मध्यम आय वाले देशों में सबसे अधिक जोखिम होता है।

कारण :

* औद्योगिक उत्सर्जन, घरेलू उत्सर्जन, मोटर वाहनों का उत्सर्जन, जंगल की आग आदि वायु प्रदूषण के कुछ सामान्य स्रोत हैं।

* स्वास्थ्य चिंता के प्रमुख प्रदूषकों में पार्टिकुलेट मैटर, कार्बन मोनोऑक्साइड, ओजोन, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड आदि शामिल हैं।

वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए किये गये उपाय :

वायू (प्रदूषण रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1981: यह अधिनियम वायु प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर का कानूनी ढांचा प्रदान करता है।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP): यह कार्यक्रम भारत में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए एक व्यापक और दीर्घकालिक योजना है।

निरंतर परिवेशी वायु गुणवता निगरानी प्रणाली (CAAQMS): यह प्रणाली देश भर में वायु गुणवता की निगरानी करती है और वास्तविक समय में वायु गुणवता डेटा प्रदान करती है।

सीएसआईआर-एनईईआरआई द्वारा विकसित ग्रीन क्रैकर्स : ये कम प्रदूषित पटाखे हैं जो पारंपरिक पटाखों की तुलना में कम हानिकारक हैं।

अरावली की महान हरी दीवारः यह एक विशाल वृक्षारोपण परियोजना है जिसका उद्देश्य अरावली पहाड़ियों को बहाल करना और दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण को कम करना है।

दिल्ली जैसे कुछ राज्यों ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए स्मॉग टावर्स का निर्माण किया है।

* अपशिष्टों और अन्य पदार्थों के डंपिंग द्वारा समुद्री प्रदूषण की रोकथाम पर 1972 कन्वंशन, जिसे "एलसी 72" या "लंदन कन्वेंशन" के रूप में भी जाना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र समुद्र कानून संधि (UNCLOS) I

जल प्रदूषण से निपटने के लिये भारत में किये गए उपाय :

जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1974

नदियों को पुनर्जीवित करने की पहल, जैसे गंगा कार्य योजना, यमुना कार्य योजना इत्यादि।

भूजल के प्रदूषण और अत्यधिक दोहन से निपटने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा की गई पहल।

ध्वनि प्रदूषण :

ध्वनि प्रदूषण को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा ऐसे के रूप में परिभाषित किया गया है जो 65 डेसिबल (db) से अधिक तेज है।

* संक्षेप रूप में, ध्वनि 75 db से ऊपर हानिकारक और 120 db से ऊपर गंभीर रूप से हीनिकारक हो जाती है। इसलिए दिन के समय में ध्वनि स्तर को 65 db से नीचे रखने की सलाह दी जाती है।रात्रि के समय के लिए उपयुक्त परिवेशी ध्वनि स्तर 30 db है; इस से ऊपर के ध्वनि स्तरों के साथ आरामदायक नींद नहीं मिल सकती है।

* विश्वभर में ध्वनि प्रदूषण की वर्तमान स्थिति को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट 'फ्रंटियर्स 2022: नॉइज, ब्लेज़ंस एंड मिसमैचेस' के माध्यम से देखा जा सकता है, जो दुनिया के सबसे शोर वाले शहरों को सूचीबद्ध करती है।

क्रमांक	शहर	देशध्वनि	प्रदूषण
1	ढाका	बांग्लादेश	119 db
2	मुरादाबाद	भारत	114 db
3	इस्लामाबाद	पाकिस्तान	105 db
4	राजशाही	बांग्लादेश	103 db
5	हो ची सिंह शहर	वियतनाम	103 db

ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सुझाये गए उपाय :

* स्रोत पर ध्वनि का दमन,
* ध्वनिक ज़ोनिंग,
* निर्माण स्थलों पर ध्वानिरोधी,
* वृक्षारोपण,
* समख्त वैधानिक उपाय।

मृदा प्रदूषण :

विषैले पदार्थों की असामान्य रूप से उच्च सांद्रता वाले मिट्टी के प्रदूषण को मृदा प्रदूषण कहा जाता है।

* यह एक गंभीर पर्यावरणीय चिंता है, क्योंकि इसमें कई स्वास्थ्य जोखिम शामिल हैं। उदाहरण के लिए, उच्च बेंजीन सांद्रता वाली मिट्टी के संपर्क में आने से ल्यूकेमिया के विकास का खतरा बढ़ जाता है।

कारण :

* वर्तमान मृदा क्षरण के प्रमुख कारणों में कार्बनिक कार्बन का हास, कटाव, बढ़ी हुई लवणता, अम्लीकरण, संघनन और रासायनिक प्रदूषण शामिल हैं।

अत्यधिक प्रकाश प्रदूषण का पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव होता है, खगोलिय अनुसंधान में बाधा उत्पन्न करते है, पारिस्थितिक तंत्र भी प्रभावित होता है और इससे ऊर्जा बर्बाद होती है।

* प्रकाश प्रदूषण की विशिष्ट श्रेणियों में प्रकाश अव्यवस्था, प्रकाश अतिचार, अतिरोशनी, चकाचौंध और आकाश की चमक शामिल हैं।
* इन चुनौतियों से निपटने के लिए एलईडी लाइट्स का उपयोग, सजावटी लाइटिंग का उपयोग कम करना आदि शामिल हैं।

नाइट्रजन प्रदूषण :

* नाइट्रजन प्रदूषण अमेनिया और नाइट्रस ऑक्साइड जैसे नाइट्रोजन यौगिकों की अधिकता के कारण होता है। कभी-कभी कृत्रिम उर्वरकों का उपयोग इस प्रदूषण का कारण बनता है।
* एक अन्य संभावित कारण बड़ी मात्रा में पशु खाद और घोल का टूटना है, जो प्रायः गहन पशुधन इकाइयों में उपस्थित होते है।इसका हमारी जलवायु, पारिस्थितिकी तंत्र और स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड सकता है।

नाइट्रोजन प्रदूषण से निपटने के लिए सुझाये गए उपाय :

* जलवायु और प्रकृति-अनुकूल कृषि के तरीकों का उपयोग करना और सिंथेटिक उर्वरकों के प्रयोग से बचना।

* किसानों को कम नाइट्रोजन वाले भविष्य में बदलाव के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जैविक और कृषि-परिस्थिति की किसानों का समर्थन करना।

इस प्रकार, विभिन्न मानवजनित गतिविधियों के कारण होने वाले विभिन्न प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को नुकसान पहुंचाने की क्षमता रखते हैं। भारत और दुनिया को विकास एजेंडे के हिस्से के रूप में "हरित दृष्टिकोण" अपनाना चाहिए। अब समय आ गया है कि मूलभूत आवश्यकताओं की सूची में "स्वच्छ पर्यावरण" - "रोटी-कपड़ा-मकान" भी जोड़ दिया जाए।

मृदा प्रदूषण से निपटने के लिए सुझाये गए उपाय :

* व्यवसाय, कृषि, पशु प्रजनन और अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल विधियों को बढ़ावा देना।
* उचित शहरी नियोजन के माध्यम से अपशिष्ट जल के कुशल परिवहन और उपचार को सुनिश्चित करना।
* ऊपरी मृदा संरक्षण, भूदृश्य पुनर्स्थापन और खनन अपशिष्ट प्रबंधन में वृद्धि करना।

रेडियोधर्मी प्रदूषण :

* जब रेडियोधर्मी तत्व आकस्मिक रूप से पर्यावरण या वातावरण में उपस्थित होते हैं और रेडियोधर्मी क्षय के कारण पारिस्थितिकी 40तंत्र के लिए जोखिम उत्पन्न करते हैं तो इसे रेडियोधर्मी प्रदूषण कहा जाता है।
* रेडियोधर्मी सामग्री पर्यावरण में अल्फा या बीटा कणों, गामा किरणों या न्यूट्रॉन जैसे संभावित रूप से हानिकारक आयानकारी विकिरण को छोड़कर क्षति उत्पन्न करती है।

रेडियोधर्मी प्रदूषण के कारण :

* परमाणु ऊर्जा उत्पादन संयंत्रों से परमाणु दुर्घटनाएँ, सामूहिक विनाश के हथियारों (WMD) के रूप में परमाणु हथियारों का प्रयोग, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में रेडियो समस्थानों का प्रयोग,
* खनन,
* रेडियोधर्मी रसायनों का रिसाव,
* कॉस्मिक किरणें और अन्य प्राकृतिक सोत,
* परमाणु अपशिष्ट प्रबंधन और निपटान।

प्रकाश प्रदूषण :

*प्रकाश प्रदूषण अनुचित, अवांछित और अत्यधिक कृत्रिम प्रकाश की उपस्थिति है।

अभ्यास प्रश्न :

1. पर्यावरण प्रदूषण निबंध लिखिए।

Unit IV

प्रयोजनमूलक हिंदी

हिंदी भारत की राजभाषा है। स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान में राजभाषा की दर्जा दी गयी है। ऐसी हिंदी के तीन विविध रूप है....1. सामान्य हिंदी, 2. साहित्यिक हिंदी, 3. प्रयोजनमूलक हिंदी। जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन केलिए किया जाता है उसे प्रयोजनमूलक भाषा कहते है। हिंदी के आगे प्रयोजन शब्द काप्रयोग करने से वह हिंदी की विशेषता को बताती है। अर्थात हिंदी के इस रूप में प्रयोग करने के पीछे किसी विशेष उद्देश्य है। प्रयोजन मूलक हिंदी को कामकाजी हिंदी और व्यावहारिक हिंदी भी कहते है। प्रयोजन का अर्थ उद्देश्य होता है। मूल का अर्थ आधरित है। इस प्रकार देखने से प्रयोजन मूलक का अर्थ किसी विशेष उद्देश्य पर आधारित। प्रयोजन मूलक के विभिन्न रूपों में कार्यालीन पत्र भी एक है।

कार्यालयीन पत्राचार :

अपने विचारों को, बातों को, निर्देशकों को या किसी भी तरह की सूचनाको पत्रों के माध्यम से किसी तक पहुँचने की प्रक्रिया भारत में प्रचीन काल से चली आ रही है। पत्र लेखन एक महत्वपूर्ण कला है। मानव जीवन में पत्र लेखन की बडी उपयोगिता है। मनुष्य अपने मनाभावों एवं विचारों को अन्य लोगों को लिखित रूप में भेजते है तो उसे पत्र कहते है। पुराने जमाने में केवल कागज पर ही लिख कर भेजे जाते थे। आज कल पत्र ई.. मेल, वाट्साप आदि के माध्यम से भेजे जा रहे है। लेकिन आज भीकुछ पत्र हमे गोपनीय संदेश पत्र (sealed cover) मे भेजे जा रहे है। इस तरह पत्रों का बहुत महत्व हैं। यावहारिक दृष्टि से पत्रों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक पत्र इन पत्रों को व्यावहारिक एवं कामकाजी पत्र भी कहते है। कार्यालयीन कियाकलापों केलिए लिखे जाने वाले विभिन्न प्रकार के सरकारी, अर्ध सरकारी, संस्थागत, व्यावसायिक तथा आवेदन पत्र इसके अंतर्गत आते हैं। इसमे तथ्यों और सूचनाओं की प्रधानता होती है।2. अनौपचारिक पत्रः इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र या सामाजिक पत्र कहते है। इस श्रेणी के पत्र मित्रों, रिश्तेदारों तथा परिचितों को लिखे जाते हैं। शोक पत्र भी इन पत्रों की श्रेणी में आते हैं। इन पत्रों में आत्मीयता का भाव रहता है।

कार्यालय पत्र और औपचारिक पत्र के स्वरूप में लिखे जाते है और यह पत्र आमतौर पर किसी अन्य कार्यालय, मंत्रालय व विभागों या कार्यालयों के द्वारा अन्य विभागों में भेजे जाते हैं।

कार्यालयीन पत्र कई पकार के होते है। जैसा कि

1. सरकारी पत्र (Official Letter)
2. अर्ध सरकारी पत्र (Demi Official Letter)
3. कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandum)
4. ज्ञापन (Memorandum)
5. परिपत्र (Circular)
6. कार्यालय आदेश (Office Order)
7. राजपत्र (Gazette)
8. संकल्प (Resolution)9. अधिसूचना (Notification)
10. पृष्ठांकन (Endorsement)
12. दुति पत्र (Express Letter)
14. अनौपचारिक टिप्पणी (Un-Official Note)
13. मितव्यय पत्र (Sarigram)
15. अनुस्मारक (Reminder)
16. प्रतिवेदन (Report)

17. तार (Telegram)

परिपत्र Circular

परिपत्र मूलतः एक पत्र है जिसमे एक महत्वपूर्ण जानकारी होती है, जो बडी संख्या में लोगों को वितरित की जाती है। उदाहरण केलिए कहें कि आपको एक बैठक केलिए पूरे विभागों को आमंत्रित करना है, या पूरे कार्यालय केलिए एक पोशाक नीति को अपडेट करना है तो इन उद्देश्यों के लिए एक परिपत्र संचार का सबसे अच्छा तरीका होगा।इसके अतिरिक्त, परिपत्रों का उपयोग विज्ञापन उपकरण के रूप में भी किया जाता है। उनमे विपणन जानकारी हो सकती है और वितरण की विस्तृत श्रृंखला हो सकती है। चाहे अंतर.. विभागीय संचार हो, विज्ञापन हो, या व्यक्तिगत कारण हो, एक परिपत्र हमेशा बडी संख्या में संवाददाताओं तक पहुँचना चाहिए। यह उसकी एक मुख्य विशेषता है।

परिपत्र के कुछ फायदे :यह संचार का एक बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है। यह सटीक और लिखित है। इसलिए गलत संचार की संभावना बहुत कम है। 2. यह काफी सस्ता भी है।3. परिपत्र भी समय बचाने का एक तरीका है। बहुत सीमित समय और प्रयास में बडी संख्या में लोगों तक पहुँचती है।4. यह बेहतरीन विज्ञापन और विपणन उपकरण भी है।

परिपत्र नमूना 1

परिपत्र संख्या

दिनांक

संशोधित कार्य घंटेकखग

कंपनी के सभी कर्मचारी,

सभी कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि संघठन के कार्य घंटों में तुरंत प्रभाव से बदलाव होगा। जैसा कि आप जानते है कि हम पिछले महीने से किसी भी शनिवार को काम नहीं करते है। इसलिए हमारे पास सप्ताह के केवल पाँच कार्य दिवस हैं। इसी कारण कार्य की गुणवत्ता प्रभावित न होने केलिए काम की घंटों में संशोधन आवश्यक था। इसलिए पिछले नौ घंटों के कार्य दिवस में एक घंटा जोडा जाएगा। संशोधन कार्य इस प्रकार होगा....

• कार्य दिवस... सोमवार से शुक्रवार (छुट्टियों को छोडकर) • काम के घंटे: सुबह 8.30 बजे से शाम 6.30 बजे तक (इन घंटों में एक घंटे का भेजन विराम होगा)

सभी कर्मचारियों से अनुरोध है कि इन नये संशोधन समयों पर ध्यान दें। समय कल से ही तुरंत प्रभावी है। समय की पाबंधी और नये समय का पालन करने का अनुरोध किया जाता है।

भवदीय

हस्ताक्षर

मुख्य सचिव

प्रतिलिपि प्रेषित : 1.

परिपत्र Circular

हिंदी विभाग, सीएच. एस. डी. सेंट थग्मा महिला महा विद्यालय द्वारा मुद्रित।

4. यह बेहतरीन विज्ञापन और विपणन उपकरण भी है।

1. यह संचार का एक बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है। यह सटीक और लिखित है। इसलिए गलत संचार की संभावना बहुत कम है। 2. यह काफी सस्ता भी है।

इसके अतिरिक्त, परिपत्रों का उपयोग विज्ञापन उपकरण के रूप में भी किया जाता है। उनमे विपणन जानकारी हो सकती है और वितरण की विस्तृत श्रृंखला हो सकती है। चाहे अंतर.. विभागीय संचार हो, विज्ञापन हो, या व्यक्तिगत कारण हो, एक परिपत्र हमेशा बडी संख्या में संवाददाताओं तक पहुँचना चाहिए। यह उसकी एक मुख्य विशेषता है।

परिपत्र के कुछ फायदे :

परिपत्र मूलतः एक पत्र है जिसमे एक महत्वपूर्ण जानकारी होती है, जो बडी संख्या में लोगों को वितरित की जाती है। उदाहरण केलिए कहें कि आपको एक बैठक केलिए पूरे विभागों को आमंत्रित करना है, या पूरे कार्यालय केलिए एक पोशाक नीति को अपडेट करना है तो इन उद्देश्यों के लिए एक परिपत्र संचार का सबसे अच्छा तरीका होगा।

3. परिपत्र भी समय बचाने का एक तरीका है। बहुत सीमित समय और प्रयास में बडी संख्या में लोगों तक पहुँचती है।

1. कंपनी के समस्त अनुभाग को सूचनार्थ। 2. सभी कर्मचारियों के सूचनार्थ